"भूषण की काव्यगत विशेषताएँ"

रीतिकाल में वीर रस की कविता करने वाले भूषण अपने आश्रयदाता महाराज शिवा जी एवं बुन्देला वीर छत्रसाल के प्रशंसक थे। भूषण इन दोनों महाराजाओं की प्रशंसा में वीर रस से पूर्ण काव्य की रचना की है। इनकी वीरता का वर्णन करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय भावना को पुष्ट करने का प्रयास किया है। देश प्रेम एवं ओज की जो धारा उनकी कविताओं में उपलब्ध होती है, वह अन्यत्र रीतिकालीन कवियों के यहाँ दुर्लभ है। शिवराज भूषण, शिवा बावनी और छत्रसाल दशक उनकी प्रसिद्ध वीर रस पूर्ण काव्य रचनाएँ हैं। भूषण को एक राष्ट्रीय कवि के रूप में भी जाना जाता है। उनकी काव्यगत विशेषताओं का विवेचन निम्न रूप में किया जा सकता है —

देश प्रेम एवं राष्ट्र भावना —

देश प्रेम से ओत-प्रोत भूषण की कविता को काव्य रसिकों ने बहुत पसंद किया है। भूषन की कविता में जनसामान्य का स्वर विद्यमान है, उसमें पूरा भारत राष्ट्र गूँज रहा है, उसकी भावना में सम्पूर्ण जन-जीवन समाहित है और उसकी वीर भावना में भारत राष्ट्र की ओजमयी परम्परा की ध्वनि निकल रही है। इसलिए भूषण को एक राष्ट्रीय कवि कहा जा सकता है। भूषण ने जिन दो राष्ट्रनायकों को अपने काव्य का मूलाधार बनाया है, वे दोनों - शिवाजी एवं छत्रसाल भारत के त्रस्त एवं भयभीत राष्ट्र का

पुनर्निर्माण कर रहे थे, दोनों राष्ट्र की जर्जर शक्ति को पुनः संगठित करके एक प्रबल राष्ट्र का निर्माण कर रहे थे तथा दोनों सम्पूर्ण भारतीय जनता की श्रद्धा एवं भक्ति के आध्यात्र थे। देश प्रेम की भावना जाग्रत कर भूषण ने एक राष्ट्रीय कवि के कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वहन किया है। महाराज शिवा जी न होते तो देश एवं जनता की क्या दुर्दशा होती? इसका चित्रण करते हुए वे कहते हैं—

"काशी हू की कला गई मथुरा मसीत भई,
शिवाजी न होते तौ सुनति होती सबकी।"

भूषण के सामने राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा का प्रश्न खड़ा था। धार्मिक स्थलों को अपवित्र किया जाना, मन्दिर गिराकर मस्जिदों का बनाया जाना, सांस्कृतिक मानदण्डों की समाप्ति, आदि के प्रयास उस समय औरंगजेब के द्वारा कराया जा रहा था। ऐसे में राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा के लिए शिवाजी महाराज संघर्ष कर रहे थे। इसलिए उन्हीं को भूषण ने आदर्श मानकर जनता को जगाने का काम किया।

युद्ध का सजीव वर्णन —

भूषण की कविता वीर रस एवं ओज गुण से सम्पन्न है। उसमें युद्धों का सजीव वर्णन किया गया है। युद्ध के लिए ~~चलने~~ प्रयाण करने वाली सेना के चलने से उठने वाली धूल के बवंडर में सूर्य एक छोटे तारे जैसा टिमटिमाता नजर आता है तथा

पृथ्वी पर चारों ओर खलबली मच जाती है। इसका सजीव वर्णन भूषण ने निम्न पंक्तियों में किया है—

"सैल फैल खैल भैल खलक में गैल-गैल,
गजन की ठेल-पेल सैल उसलत हैं।
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है॥"

थाल पर रखा हुआ पारा जिस प्रकार हिलता है, उसी प्रकार शिवाजी की सेना के चलने पर समुद्र हिलने लगता है। भूषण ने अपने काव्य में योद्धाओं की मनोदशा, उत्साह आदि का सजीव चित्रण आँखों देखी अनुभूतियों के आधार पर किया है।

धार्मिक भावों की अभिव्यक्ति —

राष्ट्रीय भावनाओं के कवि भूषण के काव्य में धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति भी हुई है। वे यह अनुभव कर रहे थे कि हिन्दू धर्म पर संकट है, औरंगजेब उसे नष्ट करने पर तुला हुआ है तथा मुस्लिम सभ्यता एवं संस्कृति का बलपूर्वक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। यह सब देखकर भूषण का मन व्यग्र हो उठा और धर्म विरोधी मुस्लिम साम्राज्य के प्रति वे मुखर हो उठे। भूषण का विरोध मुसलमानों के प्रति नहीं, बल्कि उस अन्याय एवं अत्याचार के प्रति था, जो तत्कालीन मुस्लिम शासक कर रहे थे। इसका चित्रण करते हुए वे लिखते हैं—

"बैठती दुकानें लैके रानी रजवान की,
तहाँ आइ बादशाह राह देखें सबकी।
बेटिन को यार और यार है लुगाइन को,

राइन के मार दावादार गए दबकी ।"

भाषा सौन्दर्य —

भावोंकीअभिव्यक्ति का सबसे प्रमुख साधन भाषा है। भाषा के माध्यम से ही प्रत्येक कवि अपनी भावनाओं को वाणी देता है। भूषण की अनुभूति में जितना ओज है उतनी ही उनकी अभिव्यक्ति सशक्त है। भूषण ने भाषा के माध्यम से ही अपनी रचनाओं को वीर रस के अनुरूप ओजपूर्ण एवं सशक्त बनाने में सफलता पाई है। भूषण ने अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्ति देने के लिए ब्रजभाषा को माध्यम बनाया, जो उस समय हिन्दी-काव्य की एक प्रमुख भाषा थी। भूषण ने इसी ब्रजभाषा को अपनी वीर भावना के अनुकूल ओजमयी एवं सशक्त बनाने का प्रयास किया, जिसमें संयुक्त वर्णों की बहुलता है तथा ट, ठ, ड, ढ वर्णों से युक्त होने के साथ-साथ उसमें द्वित्व वर्णों की भी प्रधानता है। शिवाजी की सूरत विजय का ओजपूर्ण वर्णन भूषण ने निम्न पंक्तियों में किया है—

"दिल्लिय दलन दबाय करि सिव सरजा निस्संक।
लूटि लियौ सूरति सहर बंकक्करि अति डंक॥"

यद्यपि की भाषा में तत्सम शब्द मिलते हैं, जैसे— मकरन्द, माधवी, मृगराज, रसाल, सुमन, उपेन्द्र, द्विजराज, सिंह आदि तथापि उसमें तद्भव शब्दों की प्रमुखता है, जैसे— जुत, सुरेस, प्रान, अरथ, सुबरन, कलिजुग आदि। इसके अतिरिक्त भूषण की भाषा में अरबी-फारसी के प्रचलित शब्दों का अत्यधिक प्रयोग देखने को मिलता है, जैसे— अरब, उमर,

सुनति, अमीरन, महलन, साहिबी, पातसाह, बिहद आदि। इसके साथ-ही-साथ भूषण की भाषा पर मराठी का भी प्रभाव है। भूषण ने महाराष्ट्र में रहने के कारण कितने ही ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो मराठी-भाषा में प्रचलित हैं, जैसे— पैज, माची, मसीत (मराठी मशीद), मौज, दंगली, बेदर, उसलत, हत्स्यो (मराठी हत्स्नों), जासती (मराठी जास्ती) आदि।

अलंकार योजना —

भूषण ने अलंकारों का प्रयोग मुख्यतया अपने भावों की भंगिमा के लिए किया है। अलंकार शास्त्र पर आधारित भूषण के ग्रन्थ का नाम "शिवराज भूषण" है, जिसमें उन्होंने कुल 105 अलंकारों का प्रयोग किया है, जिनमें 100 अर्थालंकार एवं 05 शब्दालंकार हैं। भूषण को उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक विशेष प्रिय हैं। मालोपमा का उदाहरण द्रष्टव्य है—

"इन्द्र जिमि जम्भ पर बाड़व सुअम्भ पर
रावन सदम्भ पर रघुकुल राज है।"

दीपक अलंकार का उदाहरण —

"कामिनी कन्त सों, जामिनी चन्द सों, दामिनी पावस मे घटा सों
कीरति दान सों, सूरति ज्ञान सों, प्रीति बड़ी सनमान महा सों॥"

यमक — "ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनवारी,
ऊँचे घोर मान्दिर के अन्दर रहाती हैं।
कन्द मूल भोग करैं कन्द मूल भोग करैं,
तीन बेर खाती सो तो तीनि बेर खाती हैं॥"

रस निरूपण —

रीतिकालीन कवि भूषण वीर रस के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। उनका सम्पूर्ण काव्य

वीर रस के स्थायी भाव 'उत्साह' से परिपूर्ण है। महाराज शिवाजी जब युद्ध के लिए प्रयाण करते हैं, तब संसार की क्या दशा होती है? इसका चित्रण निम्न छन्द में भूषण ने किया है —

"साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी नद मद गब्बरन के गलत है॥"

भले ही भूषण के काव्य का अंगी रस 'वीर' है, पर अन्य रस भी उसमें उपलब्ध हैं, जो वीर रस की पुष्टि में सहायक हैं। रौद्र रस, भयानक रस दसी प्रकार के हैं। शिवाजी के क्रोध का चित्रण करते हुए भूषण ने रौद्र रस की अभिव्यंजना निम्न छन्द में की है —

"भूषन भनत महावीर बलकन लाग्यौ,
सारी पातसाही के उड़ाय गए जियरे।
तमक ते लाल मुख सिवा को निरखि भए,
स्याह मुख नौरंग सिपाह मुख पियरे॥"

इसी तरह वीभत्स रस के स्थायी भाव 'जुगुप्सा' की अभिव्यक्ति निम्न छन्द में देखी जा सकती है —

"आँतन की तांत बाजी खाल की मृदंग बाजी,
खोपरी की ताल पशुपाल के अखारे में।"

छन्द योजना —

भूषण ने अपनी रचनाओं में विविध छन्दों का प्रयोग किया है। उनकी अधिकतर कविता 'मनहरण कवित्त' में लिखी गई है, तथापि उसमें दोहा, छप्पय, हरिगीतिका, मालती, सवैया, गीतिम

आदि छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। उनकी रचना 'छत्रसाल दशक' मनहरण कवित्त में लिखी गई है। उसी से एक उदाहरण द्रष्टव्य है —

"गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर,
दावा नाग जूह पर सिंह सिरताज को।"

'दोहा' छन्द का उदाहरण —

"दशरथ जू के राम भे वसुदेव के गोपाल।
सोई प्रगटे साहि के श्री सिवराज भुवाल॥"

वस्तुतः उक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि भूषण के काव्य की अभिव्यक्ति तत्कालीन युग एवं समाज से जुड़ी हुई थी। उन्होंने अपनी ओजपूर्ण वाणी में राष्ट्रीय भावनाओं को उस समय अभिव्यक्त किया जब इसकी महती आवश्यकता थी। भूषण ने अपनी अनुभूति को अभिव्यक्ति देने के लिए विभिन्न शैलियों को अपनाया। कहीं वे वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते हैं, तो कहीं विवरणात्मक शैली का। उनकी अभिव्यक्ति काव्यमय थी। अतः उसमें लाक्षणिक शैली एवं आलंकारिक शैली का प्राधान्य दिखाई देता है। इसलिए भूषण को हिन्दी साहित्य का एक अद्वितीय कवि माना जा सकता है।